May 2012 IJRSS Volume 2, Issue 2 ISSN: 2249-2496

# भारत में उच्च शिक्षा : प्रमुख चुनौतियां

डॉ नीति
एसो. प्रो. एवं विभागाध्यक्षता , बी.एड.
चौ. चरण सिंह पी.जी. कॉलेज, हेंवरा, इटावा (उत्तर प्रदेश)

सार

शिक्षा एक राष्ट्र की ताकत है। एक विकसित राष्ट्र अनिवार्य रूप से एक शिक्षित राष्ट्र है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी है। स्वतंत्रता के बाद से, भारत एक विकासशील राष्ट्र के रूप में शिक्षा के क्षेत्र में विवादास्पद रूप से प्रगति कर रहा है। हालांकि भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के सामने बहुत सारी चुनौतियाँ हैं लेकिन इन चुनौतियों से पार पाने और उच्च शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए समान रूप से बहुत सारे अवसर हैं। इसमें अधिक पारदर्शिता की आवश्यकता है, नई सहस्राब्दी में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की भूमिका और लोगों के सीखने के तरीके पर उभरते वैज्ञानिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

भारत को कुशल और उच्च शिक्षित लोगों की जरूरत है जो हमारी अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ा सकें। इसलिए भारत अन्य देशों को अत्यधिक कुशल लोगों को प्रदान करता है; भारत के लिए अपने देश को विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र में स्थानांतरित करना बहुत आसान है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों को उजागर करना है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, अवसर, चुनौतियां, कॉलेज, विश्वविद्यालय

## परिचय

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। भविष्य में, भारत सबसे बड़े शिक्षा केंद्रों में से एक होगा। भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र में

स्वतंत्रता के बाद से वश्व वद्यालयोंवश्व वद्यालयस्तर के संस्थानों और कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त वृ द्धहुई है। ' शक्षाका अ धकारअ धनियम, जो 6-14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य और मुफ्त शक्षाप्रदान करता है, ने देश की शक्षाप्रणाली में एक क्रांति ला दी है, जिसमें आंकड़े पछलेचार वर्षों में स्कूलों में आश्चर्यजनक नामांकन का खुलासा करते हैं।

उच्च शक्षामें निजी क्षेत्र की भागीदारी ने इस क्षेत्र में भारी बदलाव देखा है। आज भारत में 60% से अ धकउच्च शक्षासंस्थानों को निजी क्षेत्र द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। इसने उन संस्थानों की स्थापना में तेजी लाई है जो पछलेएक दशक में उत्पन्न हुए हैं और भारत को दुनिया में उच्च शक्षासंस्थानों की सबसे बड़ी संख्या का घर बना दिया है, जिसमें छात्रों का नामांकन दूसरे स्थान पर है (शगुरी, 2013)।

भारत में लगभग 30,484,746 छात्र उच्च शक्षाले रहे हैं। भारत में कई निजी संस्थान हैं जो भारत में व भन्नव्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। दूरस्थ शक्षाभी भारतीय उच्च शक्षाप्रणाली की एक वशेषताहै। भारत के कुछ संस्थान, जैसे कभारतीय प्रौद्यो गकीसंस्थान (IIT), को उनके शक्षाके स्तर के लए वश्वस्तर पर प्रशं सत कयागया है। IIT सालाना लगभग 8000 छात्रों का नामांकन करते हैं और पूर्व छात्रों ने भारत के निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्रों दोनों के वकासमें योगदान दिया है।

आज के युग में ज्ञान ही शक्ति है। जिसके पास जितना अ धकज्ञान होता है, वह उतना ही अ धक शक्तिशाली होता है। हालां क भारत को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शक्षामें बढ़ते निवेश के बावजूद, इसकी 25 प्रतिशत आबादी अभी भी निरक्षर है; केवल 15 प्रतिशत भारतीय छात्र हाई स्कूल तक पहुंचते हैं, और केवल 7 प्रतिशत स्नातक (मसानी, 2008)।

दुनिया के प्रमुख वकासशीलदेशों की तुलना में भारत में शक्षाकी गुणवत्ता प्राथ मकया उच्च शक्षामें में काफी कमी है। इन चुनौतियों के बावजूद भारत की उच्च शक्षाप्रणाली के पास इन चुनौतियों से पार पाने के लएसमान रूप से बहुत सारे अवसर हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने की

क्षमता है। हालाँ क इसमें अ धक पारद र्शता और जवाबदेही की आवश्यकता है, नई सहस्राब्दी में वश्व वद्यालयों और कॉलेजों की भू मका और लोगों के सीखने के तरीके पर उभरते वैज्ञानिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस लए भारत अन्य देशों को अत्य धक कुशल लोगों को प्रदान करता है; भारत के के लए अपने देश को वकासशील राष्ट्र से वक सत राष्ट्र में स्थानांतरित करना बहुत आसान है।

भारत में उच्च शक्षा क्षेत्र का वकास

जैसे-जैसे उच्च शक्षा प्रणाली बढ़ती है और व वधता आती है| समाज शक्षा की गुणवत्ता, सार्वजनिक मूल्यांकन और उच्च शक्षा संस्थानों की अंतरराष्ट्रीय रैं कंग के बारे में चं तित है। हालाँ क ये तुलनाएँ अनुसंधान प्रदर्शन को संस्थागत मूल्य के एक मानदंड के रूप में उपयोग करते हुए अनुसंधान पर अ धक जोर देती हैं। यदि ये प्र क्रयाएं शक्षण की गुणवत्ता को संबो धत करने में वफल रहती हैं, तो यह आं शक रूप से है क्यों क शक्षण गुणवत्ता को मापना चुनौतीपूर्ण है (हर्नार्ड, 2008)

भारत हमेशा से वद्वानों और शक्षा र्थयों का देश रहा है। प्राचीन काल में भी, तक्ष शला, नालंदा, वक्रम शला जैसे वश्व वद्यालयों के लए भारत को दुनिया भर में माना जाता था। स्वतंत्रता तक भारत में 20 वश्व वद्यालय, 500 कॉलेज थे जिनमें लगभग 2,30,000 छात्र नामां कत थे। आजादी के बाद से भारत ने उच्च शक्षा के आंकड़ों के मामले में काफी प्रगति की है।

भारत में उच्च शक्षा में चुनौतियां

जब से हमें आजादी मली है, तब से हमें एक महान और मजबूत शक्षा प्रणाली स्था पत करने की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। भारत अब सामान्य शक्षा के मॉडल को जारी नहीं रख सकता क्यों क यह छात्र आबादी के बड़े हिस्से के लए कायम है।

बल्कि, नई अर्थव्यवस्था में उनके अनुप्रयोगों के लए मान वकी, सामाजिक वज्ञान, प्राकृतिक वज्ञान और वा णज्य के पुराने सामान्य वषयों को जोड़कर मानव संसाधन को उत्पादक बनाने के लए एक बड़े

बड़े निवेश की आवश्यकता है और कौशल के साथ-साथ ज्ञान बढ़ाने और उ चत दृष्टिकोण वक सत करने के लए पर्याप्त क्षेत्र आधारित अनुभव है। .

समानता, प्रासं गकताऔर गुणवत्ता की अवधारणाओं को तभी क्रयान्वित कयाजा सकता है जब शक्षा प्रणाली प्रभावी और कुशल दोनों हो। इस लए उच्च शक्षाका प्रबंधन एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है।

देश के व भन्नहिस्सों में ऐसे बहुत से लोग हैं जो अभी भी अ श क्षत हैं। यह तब है जब हमने अपने शक्षाकार्यक्रमों पर अ धकजोर दिया है और अपनी प्रणाली को सभी क्षेत्रों तक पहुँचाने योग्य बनाया है।

नीतियों को और अ धकलागू करने के लएसरकार को इन क्षेत्रों पर पुन वचारकरना होगा। पैसा भी शक्षा प्रणाली के लए एक महत्वपूर्ण भू मका निभाता है जिसे सभी वश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम के लएअद् वतीयहोना चाहिए।

हमारे सं वधान के अनुसार अच्छी शक्षा प्रणाली का निर्माण करना केंद्र और राज्य सरकार की जिम्मेदारी है। इसके लएहमारे पास आ र्थक बजट होना चाहिए। ले कनइसके बावजूद हर साल शक्षा पर धन का एक बड़ा खर्च होता है जहां नि धजाती है और हमारी व्यवस्था बरकरार रहती है।

उच्च शक्षामें क्रांति की बहुत जरूरत है। ये केवल कुछ चुनौतियाँ हैं जो शक्षाके वर्तमान परिदृश्य में सभी पहलुओं को उजागर करती हैं और हमें उन पर सख्ती से अमल करना होगा।

हम दुनिया के शीर्ष 100 वश्व वद्यालयोंमें एक भी वश्व वद्यालयको सूचीबद्ध करने में सक्षम नहीं हैं। इन छह दशकों के दौरान व भन्नसरकारें बदलीं। उन्होंने शक्षाप्रणाली को बढ़ावा देने और व भन्नशक्षा शक्षानीतियों को लागू करने की को शशकी ले कनवे दुनिया के लएएक उदाहरण पेश करने के लए पर्याप्त नहीं थे। यूजीसी लगातार काम कर रहा है और उच्च शक्षाके क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शक्षापर ध्यान केंद्रित कर रहा है। फरभी हम अपनी शक्षाप्रणाली में बहुत सी समस्याओं और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। भारत में उच्च शक्षाप्रणाली में कुछ बुनियादी चुनौतियों की चर्चा नीचे की गई है:

नामांकन: उच्च शिक्षामें भारत का सकल नामांकन अनुपात केवल 15% है जो विकसितऔर साथ ही अन्य विकासशीलदेशों की तुलना में काफी कम है। स्कूल स्तर पर नामांकन में वृद्धिके साथ, उच्च शिक्षा संस्थानों की आपूर्ति देश में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिएअपर्याप्त है।

इक्विटी: समाज के विभिन्नवर्गों के बीच सकल नामांकन अनुपात में कोई समानता नहीं है। पिछले अध्ययनों के अनुसार भारत में पुरुष और महिला के बीच उच्च शिक्षामें सकल नामांकन अनुपात काफी हद तक भिन्नहोता है। क्षेत्रीय भिन्नताएंभी हैं, कुछ राज्यों में उच्च सकल नामांकन अनुपात है जब ककुछ राष्ट्रीय जीईआर से काफी पीछे हैं जो उच्च शिक्षाप्रणाली के भीतर एक महत्वपूर्ण असंतुलन को दर्शाता है।

गुणवत्ता: उच्च शिक्षामें गुणवत्ता एक बहुआयामी, बहुस्तरीय और एक गतिशील अवधारणा है। उच्च शिक्षामें गुणवत्ता सुनिश्चित करना आज भारत में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। हालांकि सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर लगातार ध्यान दे रही है। अभी भी भारत में बड़ी संख्या में कॉलेज और विश्वविद्यालययूजीसी द्वारा निर्धारित न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं और हमारे विश्वविद्यालयदुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयोंमें अपनी जगह बनाने की स्थिति में नहीं हैं।

बुनियादी ढांचा: भारत की उच्च शिक्षाप्रणाली के लिएखराब बुनियादी ढांचा एक और चुनौती है, विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा संचालितसंस्थान खराब भौतिक सुविधाओंऔर बुनियादी ढांचे से पीड़ित हैं।

राजनीतिक हस्तक्षेप: अधिकांश शैक्षिणक संस्थान राजनीतिक नेताओं के स्वामित्व में हैं, जो विश्वविद्यालयोंके शासी निकायों में महत्वपूर्ण भूमिकानिभा रहे हैं। वे अपने स्वार्थ के लिएनिर्दोष छात्रों का उपयोग कर रहे हैं। छात्र अभियानआयोजित करते हैं, अपने स्वयं के उद्देश्यों को भूल जाते हैं और राजनीति में अपना करियर विकसितकरना शुरू कर देते हैं।

शिक्षक: शिक्षकोंकी कमी और राज्य की शिक्षाप्रणाली में योग्य शिक्षकोंको आकर्षितकरने और बनाए बनाए रखने में असमर्थता कई वर्षों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षाके लिएचुनौतियां खड़ी कर रही हैं। बड़ी

संख्या में नेट/पीएचडी के उम्मीदवार बेरोजगार हैं, यहां तक कि उच्च शिक्षा में बहुत सी रिक्तियां हैं, ये योग्य उम्मीदवार अन्य विभागों में आवेदन कर रहे हैं जो उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए सबसे बड़ा झटका झटका है।

प्रत्यायन: नैक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के अनुसार, जून 2010 तक, "देश के कुल उच्च शिक्षा संस्थानों में से 25% भी मान्यता प्राप्त नहीं थे। और मान्यता प्राप्त लोगों में से केवल 30% विश्वविद्यालय और 45% कॉलेज 'ए' स्तर पर रैंक करने के लिए गुणवत्ता के पाए गए।

अनुसंधान और नवाचार: हमारे देश में बहुत ही नाममात्र के विद्वान हैं जिनके लेखन का हवाला प्रसिद्ध पश्चिमी लेखकों ने दिया है। उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध पर अपर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। छात्रों को सलाह देने के लिए अपर्याप्त संसाधन और सुविधाएं साथ ही सीमित संख्या में गुणवत्ता वाले संकाय हैं। अधिकांश शोधार्थी फेलोशिप के बिना हैं या उन्हें समय पर फेलोशिप नहीं मिल रही है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके शोध को प्रभावित करता है। इसके अलावा, भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान अनुसंधान केंद्रों से खराब तरीके से जुड़े हुए हैं। तो, यह भारत में उच्च शिक्षा के लिए चुनौती का एक और क्षेत्र है।

उच्च शिक्षा की संरचना: भारतीय शिक्षा का प्रबंधन अत्यधिक केंद्रीकरण, नौकरशाही संरचनाओं और जवाबदेही की कमी, पारदर्शिता और व्यावसायिकता की चुनौतियों का सामना करता है। संबद्ध कॉलेजों और छात्रों की संख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप, विश्वविद्यालयों के प्रशासनिक कार्यों का बोझ काफी बढ़ गया है और शिक्षा और अनुसंधान पर मुख्य ध्यान कम हो गया है (कुमार, 2015)।

उच्च शिक्षा में अवसर

भारत एक बड़ा देश है, जिसकी अनुमानित जनसंख्या 18 से 23 वर्ष के बीच के युवाओं की संख्या 150 मिलियन के आसपास है। बाजार का विशाल आकार भारत में उच्च शिक्षा क्षेत्र के विकास के लिए विशाल विशाल अवसर प्रदान करता है। भारत में अब 33,000 से अधिक कॉलेज और 659 विश्वविद्यालय होने का का दावा है, जो पिछले छह दशकों के दौरान काफी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

दुर्भाग्य से, भारत का शै क्षकबुनियादी ढांचा इतनी बड़ी मात्रा को संभालने के लएअपर्याप्त है। शै क्षक क्षेत्र में सभी सरकारी खर्च के बावजूद, बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लए यह बहुत ही अपर्याप्त है। इस लए उच्च शक्षाक्षेत्र को अब निजी और वदेशीनिवेश के लएआशाजनक क्षेत्रों में से एक के रूप में पहचाना गया है। यह गैर- वनिय मतऔर वनिय मतदोनों क्षेत्रों में निवेश के अपार अवसर प्रदान करता है।

भारतीय उच्च शक्षाप्रणाली व भन्नचुनौतियों के बावजूद बहुत तेजी से बढ़ रही है ले कनऐसा कोई कारण नहीं है कइन चुनौतियों को दूर नहीं कयाजा सकता है। नए जमाने के शक्षणउपकरणों की मदद से भारत जैसे देश के लएइन समस्याओं को दूर करना और देश के उच्च शक्षाक्षेत्र में एक आदर्श बदलाव लाना आसान है। वशालआबादी वाले ऐसे जीवंत देश के साथ उ चतरूप से श क्षतहोने की संभावनाएं अनंत हैं। यदि उन्नत डजिटल शक्षणऔर शक्षणउपकरणों का उपयोग करके ज्ञान प्रदान कयाजाता है, और समाज को इस बात से अवगत कराया जाता है कहम वर्तमान में कहां पछड़रहे हैं, तो हमारा देश आसानी से दुनिया के सबसे वक सतदेशों में से एक के रूप में उभर सकता है।

राज्य स्तर पर उच्च शक्षानेतृत्व और प्रबंधन में रणनीतिक जुड़ाव और क्षमता निर्माण के अवसर हैं। भारत के लए गुणवत्ता आश्वासन, अंतर्राष्ट्रीय ऋण मान्यता और एकीकृत राष्ट्रीय योग्यता ढांचे प्रणालीगत सुधार के क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग करने के अवसर हैं। उच्च शक्षा में शै क्षकअवसर की समानता को इस लएआवश्यक माना जाता है क्यों कउच्च शक्षाआय और धन की की असमानताओं को कम करने या समाप्त करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। शै क्षकअवसरों को समान करने का वचारइस तथ्य में भी निहित है क"उच्च शक्षाद्वारा लाभ की क्षमता सभी वर्गों के लोगों में फैली हुई है। समाज में अप्रयुक्त क्षमता के महान भंडार हैं; मौका दिया जाए तो वे शीर्ष पर सकते हैं। वास्तव में, उच्चतम स्तर की प्रतिभा का एक बड़ा हिस्सा शक्षाकी एक असमान प्रणाली द्वारा खो गया है"।

स्नातकों की रोजगार क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता उद्यम शिक्षा और उद्य मता, उद्योग के साथ संबंध, अनुसंधान कौशल और अंग्रेजी सहित हस्तांतरणीय कौशल की वस्तृत श्रृंखला में सहयोग के लए प्रवेश बिंदु प्रस्तुत कर रही है। व्यावसायिक कौशल बाजार में भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में उभरती दिलचस्पी अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ संभा वत जुड़ाव के लए क्षेत्र प्रदान करती है। मंचों (सम्मेलनों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों) में समर्थन और भागीदारी बढ़ाकर उच्च शिक्षा में मजबूत संबंध बनाने और आपसी समझ बढ़ाने की आवश्यकता है जो दुनिया के अन्य देशों के साथ बहस और संवाद को सक्षम बनाता है।

भारतीय उच्च शिक्षा के मुद्दे:

जैसे-जैसे भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में उन क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा करने का प्रयास करता है जहां अत्य धक कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होती है, उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तेजी से महत्वपूर्ण हो जाती है। अब तक, भारत के बड़े, श क्षत जनसंख्या आधार और कम से कम अच्छी तरह से प्र श क्षत वश्व वद्यालय के स्नातकों के भंडार ने देश को आगे बढ़ने में सहायता की है, ले कन प्रतिस्पर्धा गंभीर है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में डग्री प्राप्त करने वाले वज्ञान और प्रौद्यो गकी के क्षेत्र में 86 प्रतिशत भारतीय छात्र स्नातक होने के तुरंत बाद घर नहीं लौटते हैं।

उच्च शिक्षा की वर्तमान प्रणाली उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं करती है जिसके लए इसे शुरू कया गया है। सामान्य शिक्षा में ही इतना लाभदायक व्यवसाय बन गया है ककोटा प्रणाली और राजनीतिकरण के साथ व्यावसायिक संस्थानों की संख्या में वृ द्ध से गुणवत्ता नष्ट हो जाती है, जिससे लूट प्रणाली की आग में ईंधन जुड़ जाता है, जिससे स्नातकों की बेरोजगारी में वृ द्ध होती है, जिससे उनकी पीड़ा को कम करने के लए त्वरित राहत नहीं मलती है।

स्पष्ट रूप से श क्षतशक्षकोंकी कमी है और शक्षणएक आकर्षक पेशा नहीं है। करियर के लहाजसे यह आ खरी पसंद है। प्रत्येक वर्ष उत्पादित पीएच.डी की संख्या बहुत कम है और शक्षा वदोंके लए आवश्यक बहुत अ धकहै। वास्तव में, कई संस्थानों में नए स्नातकों को पढ़ाने के लएनियुक्त कया जाता है, जिससे कक्षा में शक्षाकी गुणवत्ता खराब होती है।

भारत में उच्च शक्षाके अ धकांशपर्यवेक्षकों का मानना है कपहुंच, समानता और गुणवत्ता के मामले में उच्च शक्षासंस्थानों का प्रदर्शन संतोषजनक से कम रहा है। अब उभरते अवसरों, बढ़ती युवा पीढ़ी की आबादी और 21वीं सदी की चुनौतियों की आवश्यकता को पूरा करने के लएशै क्षकक्षेत्र के वकासके लएकाम करने की तत्काल आवश्यकता है।

उच्च शक्षाप्रणाली में सुधार के सुझाव:

- भारतीय शक्षाप्रणाली को वश्वस्तर पर अ धकप्रासं गकऔर प्रतिस्पर्धी बनाने के लएप्राथ मक से उच्च शक्षास्तर पर नवीन और परिवर्तनकारी दृष्टिकोण को लागू करने की आवश्यकता है।

- उच्च शक्षणसंस्थानों को गुणवत्ता और प्रतिष्ठा में सुधार करने की आवश्यकता है।
- कॉलेजों और वश्व वद्यालयोंका एक अच्छा बुनियादी ढांचा होना चाहिए जो छात्रों को आक र्षत कर सके।
- सरकार को भारतीय उच्च शक्षासंस्थानों और शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए और बेहतर गुणवत्ता और सहयोगी अनुसंधान के लए राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाओं और शीर्ष संस्थानों के अनुसंधान केंद्रों के बीच संबंध भी बनाना चाहिए।
- स्नातक छात्रों को ऐसे पाठ्यक्रम प्रदान करके उन पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है जिसमें वे उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें, वषयका गहरा ज्ञान प्राप्त कर सकें ता कउन्हें कंपनियों में भर्ती के बाद नौकरी मलसके जिससे उच्च शक्षाके लएअनावश्यक भीड़ कम हो सके।

- सार्वजनिक निजी दोनों वश्व वद्यालयोंऔर कॉलेजों को राजनीतिक संबद्धता से दूर होना चाहिए
- पक्षपात, पैसा कमाने की प्र क्रया शक्षाप्रणाली आदि से बाहर होनी चाहिए।
- उच्च शक्षामें एक बहु वषयकदृष्टिकोण होना चाहिए ता कछात्र का ज्ञान केवल उसके अपने वषयोंतक ही सी मतन रहे।

निष्कर्ष

शक्षाएक ऐसी प्र क्रयाहै जिसके द्वारा व्यक्ति के शरीर, मन और चरित्र का निर्माण और मजबूती होती है। यह एक व्यक्ति को एक सर्वांगीण व्यक्तित्व वक सतकरने में सक्षम बनाता है।

स्वतंत्रता के बाद पछलेछह दशकों में भारत में उच्च शक्षाका बहुत तेजी से वस्तारहुआ है फरभी यह सभी के लएसमान रूप से सुलभ नहीं है। भारत आज दुनिया के सबसे तेजी से वकासशीलदेशों में से एक है, जिसकी वा र्षक वकासदर 9% से ऊपर जा रही है।

अभी भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा निरक्षर है और बड़ी संख्या में बच्चों को प्राथ मक शक्षाभी नहीं मलतीहै। इसने न केवल आबादी के एक बड़े हिस्से को देश के वकासमें पूरी तरह से योगदान देने से वं चतरखा है, बल्कि इसने लोगों के लाभ के लएजो भी वकासहुआ है, उसका लाभ उठाने से भी रोका है।

निस्संदेह भारत उच्च शक्षामें व भन्नचुनौतियों का सामना कर रहा है ले कनइन चुनौतियों से निपटने और उच्च शक्षाको बढ़ावा देने के लएअत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत एक वशालमानव संसाधन क्षमता वाला देश है, इस क्षमता का उ चतउपयोग करने के लएएक ऐसा मुद्दा है जिस पर चर्चा करने की आवश्यकता है।

अवसर उपलब्ध हैं ले कनइन अवसरों से लाभ कैसे प्राप्त कयाजाए और उन्हें दूसरों तक कैसे पहुँचाया जाए यह चंताका वषयहै। वकासकी दर को बनाए रखने के लए संस्थानों की संख्या और भारत में उच्च शक्षाकी गुणवत्ता में भी वृ द्धकरने की आवश्यकता है।

भ वष्यकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लए वत्तीयसंसाधनों, पहुँच और इक्विटी, गुणवत्ता मानकों, प्रासं गकता, बुनियादी ढांचे और अंत में जवाबदेही पर फरसे वचारकरने की तत्काल आवश्यकता है।

संदर्भ


1. मसानी, ज़रीर, इं डयास्टिल ए शयाजअनिच्छुक टाइगर, बीबीसी रे डयो4, 27 फरवरी 2008।

2. न्यूज़वीक, वशेषरिपोर्ट: शक्षाकी दौड़, अगस्त 18-25, 2011।

3. वज्ञानऔर प्रौद्यो गकी शक्षा। प्रेस सूचना ब्यूरो, 2009 08-08 को लयागया

4. मत्र श्रमण, फोर्ब्स के वश्वके पछलेकार्यालय को कैसे बचाएं, 03.14.2008

5. हेनार्ड, फैब्रिस, रिपोर्ट, लर्निंग अवर लेसन: रिव्यु ऑफ क्वा लटीटी चंगइन हायर एजुकेशन, 2008।

6. भारत में उच्च शक्षा बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2010) और फक्कीउच्च शक्षा शखरसम्मेलन सम्मेलन 2010 से आगे।

7. बालचंदर, केके "भारत में उच्च शक्षा समानता और समानता के लए खोज", मुख्यधारा, 1986।